



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhed
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M.5.20 विषय ..सोता
नांव- ..हरिहर नामावली सोता.....
लेखक/लिपीकार ..श्री.वी.गोसावी.....
पृष्ठ.....२..... MSS.
काळ पूर्ण/अपूर्ण

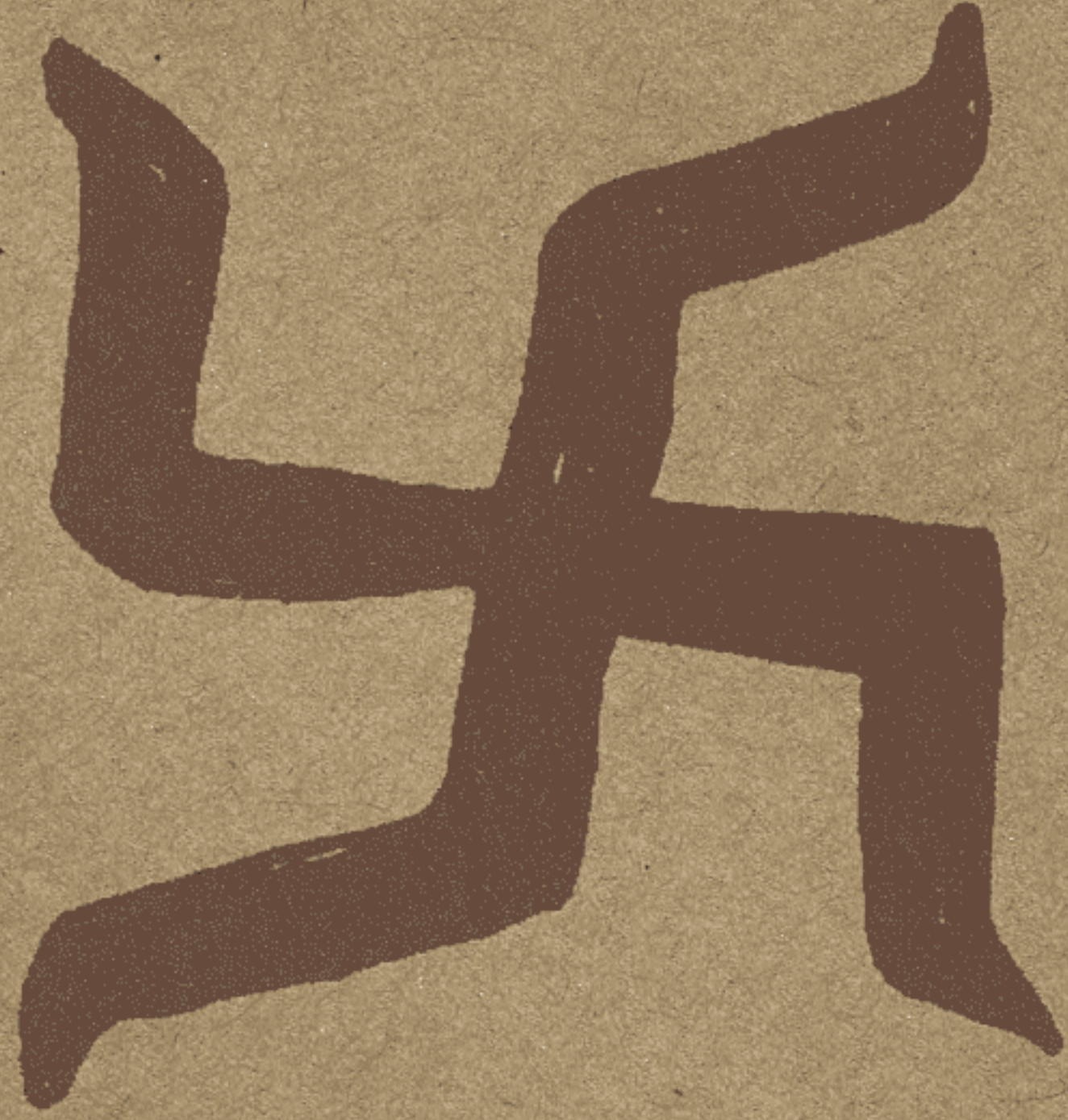
संस्कृत

28

हरिहर नामावली स्तोत्र

पाने २-

Checked 2012



M-520

११८ - ८८ - श्री श्री श्री. हरिहरनामावली स्तोत्र

श्रीगणेशायनमः॥ गोविंदमाधवमुकुंदहरेमुरारेशंभोशिवे
शशशिशेश्वरमूलपाणे॥ दामोदराच्युतजनार्दनवासुदेवत्या
ज्याभट्टायइतिसंततमामनंति॥ १॥ गंगाधरांधकरिपोहर
नीलकंठवैकुण्ठकैठभरियोकमठाक्षपाणे॥ भूतेशखंडपरशो
मृडचंडिकेशत्या॥ २॥ विष्णोर्नृसिंहमधुसूदनचक्रपाणेगो
रीपतेगिरिशशंकरचंद्रचुड॥ नारायणासुरनिबर्हणशारं
डूपाणेत्या॥ ३॥ मृत्यंजयोऽग्रविशामेक्षणकामशत्रोश्री
कांतपीतवसनंबुदनीलशौरे॥ इशानकृतिवसनत्रिदशै
कनाथत्या॥ ४॥ लक्ष्मीपतेमधुरिपोपुरुषोत्तमाद्यश्री

॥१॥

कंठदिग्वसनशांतपिनाकपाणे आनंदकंदधरणीधरप
अनाभ ॥५॥ सर्वेश्वर त्रिपुर सुदनरेवदेवब्रह्मण्यदेव गरु
डध्वजशंखपाणे ॥ अक्षोरगाभरणबालमृगांकमौलेत्या-
६॥ श्रीरामराघवरमेश्वररावणारेभूतेशमन्मथरिपोप्र
मथाधिनाथ ॥ चाणूरमर्दनहृषीकपतेपुरारेत्या ॥७॥
श्रुलीनगिरिशरजनीशकलावतंसकंसत्प्रणाशानसना
तनकेशिनाश ॥ भर्गत्रिनेत्रभवभूतपतेपुरारेत्या ॥८॥
गोपिपतेयदुपतेवसुदेवसूनोकर्पूरगौरहृषभध्वज

॥१॥

भालनेत्र॥ गोवर्धनो धरणधर्मधुरीणगोपत्या०॥९॥
स्थाणोत्रिलोचनपिनाकधरस्मरारेकस्मानिरुद्धकम
लाकरकल्मशारे॥ विश्वेश्वरत्र्यपथगारद्रजटाकलाप
त्या०॥१०॥ अष्टोत्तराधिगशतेनसुचारुनाम्नासंदर्भि
तालुलितरत्नकदंबकेन॥ सन्नायकां दृढगुणां द्विज
कंठगांयः कुर्यादिमांसृजमहोशयमन्यपश्येत्॥११॥
गणाउचुः॥ इत्थं द्विजेंद्रनिजभृत्यगणांसदैवसंशिक्ष
येनवनिगांसहिधर्मराजः॥ अन्येपियेहरिहरांकधरा

॥२॥

धरायांतेदुरतः पुनरहोपरिवर्जनिः ॥१२॥ अगस्त्युवाच
योधर्मराजरचितं ललितप्रबंधां नामावलि सकलकल्प
बीजहंत्री ॥ श्रीवत्सकौस्तुभभृत्यशशिशेखरस्य नित्यं
जपेत्स्तनरसेनपिबेत्समातुः ॥ सूत उवाच ॥ यो धर्मरा
जरचितं ललितप्रबंधं ॥ इति श्रुत्वा कथां रम्यां शिवशर्मग
णैरितां पुरोगच्छन् विमानेन ददृशे शरसां पुरीं ॥ इति
श्रीस्कंदपुराणे काशिशंखदेवलोपासुद्रा अगस्तीसंवादे
हरीहरनामावलीस्तोत्रसंपूर्णं ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥२॥

[OrderDescription]
,CREATED=09.10.19 10:09
,TRANSFERRED=2019/10/09 at 10:10:50
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0001994
,Book Name=520
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,